शरीर किराये का मकान

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

प्रत्येक व्यक्ति अपनी रोजी–रोटी कमाकर घर में आनन्दपूर्वक रहता है। पशु–पक्षी, मानव तथा अन्य प्राणी दिनभर अपना कार्य करते रहते हैं। सांयकाल अपने घरों में आकर परिवार के साथ प्रेम से रहते हैं। पशु–पक्षियों की अपनी–अपनी भाषाएं हैं। वे एक–दूसरे के भावों को समझते हैं। किसी भी प्रकार का भय आने पर पशु–पक्षी विशेष आवाज करते हैं जिससे सभी सावधान हो जाते हैं। पक्षियों का भी अपना घौंसला होता है। दूर देश से आकर के पक्षी अपने घौंसले का निर्माण करते हैं और अपने परिवार के साथ रहते हैं। जिसमें हम रहते हैं वह मकान है। यह भौतिक संसाधनों का मकान है। इसी तरह शरीर भी एक मकान है। इसमें आत्मा का वास है। जिस व्यक्ति के पास मकान नहीं होता वह किराये के मकान में रहता है। मकान मालिक जब मकान से निकाल देता है तो दूसरी जगह मकान खोजना पड़ता है। शरीर और आत्मा का भी सम्बन्ध मकान मालिक और किरायेदार जैसा है। शरीर नव द्वारों वाला घर है। यह इन्द्रिय जगत का स्थान है। इन्द्रियां विषयों को ग्रहण करती हैं और विषयों का स्वाद लेने में ही लगी रहती है। घर पुराना हो जाने पर गिरने की आशंका से दूसरे घर का निर्माण करना पड़ता है। गीता में कहा गया है कि मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर नवीन वस्त्रों को धारण करता है। आत्मा भी भौतिक शरी को त्यागकर नये शरीर को धारण करती है। यह शरीर किराये का मकान है। अतः इससे मोह नहीं करना चाहिए।

इस संसार में आकर मानव ने क्या खोया और क्या प्राप्त किया? इस बात की समीक्षा होनी चाहिए। मानव व्यवहार जगत में जीवनयापन करता है। उसको समय–समय पर समीक्षा करनी चाहिए। उसको समीक्षा कर यह जानना चाहिए कि मैं कौन हूॅ? मैं कहां से आया हूॅ? मैं कहॉ जाऊंगा? इन तीनों प्रश्नों के उत्तर में सब कुछ समाया हुआ है। मानव जीवन बहुमूल्य है। गोस्वामी तुलसीदासजी ने लिखा है कि–

बड़े भाग्य मानुष तन पावा,

सूर नर मुनि सद्ग्रन्थन गावा।

मानव का शरीर साधन–धाम और मोक्ष का द्वार है। जीवन और जगत की दृष्टि से इसका बहुत मूल्य है। शरीर यदि स्वस्थ रहता है तभी सभी प्रकार की धार्मिक क्रियाएं की जा सकती हैं। मानव जीवन को केवल कोरा स्वप्न ही नहीं कहा जा सकता। दार्शनिक दृष्टि से वर्तमान का अस्तित्व अनुभवगम्य नहीं है। हम या तो अतीत में जीते हैं अथवा भविष्य में रहते हैं। प्रत्येक क्षण अतीत बनता जाता है। भविष्य को हम वर्तमान बनाते रहते हैं। हमारे जीवन के आगे–पीछे मृत्यु का साम्राज्य रहता है। सुबह होती है, शाम होती है, उम्र इसी तरह बीतती जाती है। जब अन्त समय आता है तब ऐसा लगता है कि इतने वर्षों का समय कितनी जल्दी व्यतीत हो गया। इतने वर्षों पहले होने वाला बाल्यकाल कल जैसी घटना लगता है। सब कुछ सीनेमा दृश्य की तरह आँखों के सामने नाचने लगता है। ऐसा लगता है कि सब कुछ स्वप्न था। जीवन के सुख–दुःखों की स्मृति स्वप्न के सुखद–दुःखद अनुभवों की भांति शेष रह जाती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि मानव जीवन समस्त अनुभव स्पप्न मात्र हैं।

जीवन में जाग्रतावस्था और स्पप्नावस्था दोनों अवस्थाएं रहती हैं। मनुष्य इस सष्टि का सर्वोत्तम प्राणी है। वह एक ऐसा प्राणी है जो खुलकर अपने विचार व्यक्त कर सकता है। अपने हांथ–पांव, बुद्धि–विवेक का इस्तेमाल कर सकता है। विश्व में जितनी भी कलाकृतियां हैं और जितनी भी संरचनाएं हैं, वे समस्त मानव के इन हाथों की ही देन हैं। ये कलाकृतियां सृजनहार की सृजनशीलता को सार्थक करती हैं। मनुष्य के क्रियाकलाप को देखकर यह सोचना स्वाभाविक है कि एक छोटा सा जीव इतना शक्तिशाली कैसे बना? मावन विश्व के प्रत्येक पदार्थ को अपने लिए उपयोगी बना लेता है। बड़े–बड़े हिंसक जीवों को भी वश में कर लेता है। शेर और चीता जैसे जानवरों को अपने इशारे पर नचा देता है हाथी जैसे विशालकाय जीव को एक इंच के अंकुश से वश में कर लेता है। इस प्रकार मानव जीवन में बहुत कुछ खोता है और बहुत कुछ प्राप्त भी करता है। ये सब भौतिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुएं हैं।

मानव कर्म का परिणाम भोग लेने के पश्चात इस संसार से बिदा हो जाता है। जीवनभर की कमाई यहीं छूट जाती है। शरीर भी यहीं छूट जाता है और पंचतत्त्व में विलीन हो जाता है।

जीव केवल कर्म लेकर आता है और कर्म लेकर ही जाता है। इसलिए इस संसार में आने के बाद जीव को सत्कर्म करना चाहिए। सत्कर्म करने से जीव की ऊर्ध्वगति होती है। पुण्य और पाप का लेखा जोखा सुरक्षित रहता है। समय के अनुसार वह उदय में आता है। सुख–दुःख के रूप में प्राणी को उसका भोग करना पड़ता है। जो जैसा कर्म करता है उसको वैसा फल भोगना पड़ता है। समय आने पर कर्म अपना फल अवश्य देता है। कोई व्यक्ति किसी का एक बाल भी टेढ़ा नहीं कर सकता। सब कुछ स्वकृत कर्मों का परिणाम है। **जाको राखे साइंयां मार सके ना कोय, बाल न बांका हो सके जो जग बेरी होय**। यह कहावत यह बताती है कि ईश्वर के अनुकूल रहने पर चाहे सम्पूर्ण संसार विरूद्ध हो जाये, मनुष्य का कोई कुछ भी नुकसान नहीं कर सकता।